गणित

(3)

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

2019

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र. भोपाल
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH

9-

0141569

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

2	9	3	4	2	6	3	0	7

शब्दों में

दो	नौ	तीन	चार	दो	छः	तीन	शून्य	सात

एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे →

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 1 शब्दों में एक

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 03

ग :– परीक्षा का दिनांक 02 | 03 | 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

HSSC EXAM.

संस्था कोड- 341012

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
रामसखा कुशवाह	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर, क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मु... निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के ... एवं निर्धारित मुद्रा
	Dr. Sandeep ... H.S.S. Bar... Mob. No. 887... Valuer No

मुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	
27	
28	

कुल प्राप्तांक शब्दों में	कुल प्राप्तांक अंकों में

2

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '1' का उत्तर

(i) ...वती
(ii) ...बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
(iii) ...ज्ञापन
(iv) ...मानवतावाद
(v) ...सान न देना

प्रश्न क्रमांक '2' का उत्तर

(i) (... जयकुमार जलज
(ii) (... सातवें वर्ष में
(iii) (... चिरगाँव
(iv) (...
(v) ... दिये जलाना

प्रश्न क्रमांक '3' का उत्तर

(i ... सत्य
(ii ... सत्य
(ii... सत्य
(i... सत्य
(... असत्य

P.T.O.

③ [ ] + [ ] = [ ]

योग … पृष्ठ 3 के अंक … कुल …

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '4' का उत्तर

(i) …माल वर्षा - भवानी प्रसाद मिश्र
(ii) …ध्यक्ष महोदय - व्यंग्य विधा
(iii) …रे जीवन के कुछ चित्र - डॉ. रामकुमार वर्मा
(iv) …लक्ष्यार्थ - मुहावरा
(v) …स के अंग - चार

प्रश्न क्रमांक '5' का उत्तर

B S E

(i) …बुन्देली, बघेली।

(ii) …ह पर गर्व नहीं करना चाहिए' मीराबाई ने ऐसा …इसलिए कहा है क्योंकि यह देह नश्वर है।

(iii) व्यतिरेक अलंकार
(iv) श्री ~~बिना~~ 'विनोबा भावे' जी।
~~(v) 50,000 व~~

(v) एक नैनो मीटर का साइज मानव बाल के पचास हजारवें हिस्से के बराबर होता है।

P.T.O.

योग पद + पृष्ठ 4 के अंक = कुल

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '6' का उत्तर

अथवा

उत्तर – रूपी देश हमारे यहाँ विद्या (शिक्षा) प्राप्ति के उद्देश्य आते रहे हैं।

प्रश्न क्रमांक '7' का उत्तर

अथवा

'तुम चलाते हो सदा चिर चेतना के तीर' पंक्ति के माध्यम से 'नवीन' जी कहते हैं कि देश का नवयुवक दिशा रूपी और काल रूपी धनुष को धारण करने वाला धनुर्धर है, जो चिर चेतना रूपी तीर चलाकर देश की रक्षा करने वाले पहरेदारों को सावधान करता है। नवयुवक अपनी वीरता से देश की रक्षा करने के साथ-साथ देश की स्वाधीनता के प्रति भी सजग एवं सक्रिय रहता है।

P.T.O.

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '8' का उत्तर

अथवा

कवि ने भारतमाता की जय-जयकार करने हेतु सूर्य-चन्द्रमा, ग्रह-नक्षत्रों, देशज मित्रों, श्रमकर्ताओं, रचनाकारों तथा ऋतुओं का आह्वान किया है।

प्रश्न क्रमांक '9' का उत्तर

केवट की जीविका का एकमात्र आधार उसकी नाव थी, जिसके माध्यम से वह अपनी पत्नी तथा बच्चों पालन-पोषण करता था।

प्रश्न क्रमांक '10' का उत्तर

अथवा

चातक अपनी बोली के द्वारा कवि के विरही हृदय को आघात पहुँचा रहा है। इसलिए कवि घनानन्द ने चातक को 'घातक' कहकर सम्बोधित किया है।

P.T.O.

+ =

योग पृष्ठ 6 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '11' का उत्तर

उत्तर- मानव के चिर सुख का अमृत खोजने के लिए गौतम अपनी पत्नी यशोधरा और अबोध बालक राहुल को छोड़कर मध्यरात्रि में जंगलों और पहाड़ों में चले गए थे

प्रश्न क्रमांक '12' का उत्तर

B
S
E

भाड़ का अभिषेक करने से पूर्व सुर्रो रानी ने एक लात मारकर भाड़ के सिर को चकनाचूर
दिया।

प्रश्न क्रमांक '13' का उत्तर

"लिखने के लिए मैंने कभी नहीं लिखा" उपाध्याय जी के इस कथन का आशय यह है कि उन्होंने दूसरों के कहने पर न लिखकर
य की इच्छा से लिखा है।

P.T.O.

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '14' का उत्तर

अथवा

भारतवासी अपनी सभ्यता के उजाले को छोड़कर ~~पत्~~ पाश्चात्य अँधेरे रूपी संस्कार की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। यहाँ पर कवि ने पश्चिमी अंधानुकरण को ही 'आयातित अंधकार' कहा है।

प्रश्न क्रमांक '15' का उत्तर

अथवा

(i) कलेजा जलना – ईर्ष्या होना।
वाक्य प्रयोग :- मोहन की नौकरी लगते देखकर सोहन का कलेजा जलने लगा।

(ii) अँगूठा दिखाना – इन्कार करना
वाक्य प्रयोग :- राम ने हमेशा अपने मित्र की ~~सहाक~~ सहायता की करता है परन्तु जब उसे आवश्यकता पड़ी तो उसके मित्र ने उसे अँगूठा दिखा दिया।

P.T.O.

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '16' का उत्तर

विभावना अलंकार :-
काव्य में जहाँ कारण न होते हुए भी कार्य का होना पाया जाए, वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदा.-
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना,
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी,
बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी ॥

B S E

प्रश्न क्रमांक '17' का उत्तर

अथवा

गौरा के माँ बनने पर लेखिका के घर में मानो दुग्ध महोत्सव आरंभ हो गया हो। गौरा प्रतिदिन प्रातः-सायं बारह सेर के लगभग दूध देती थी। उसके बछड़े लालमणि के लिए कई सेर छोड़ देने पर भी इतना अधिक शेष बचता था कि आसपास के बालगोपाल से लेकर कुत्ते-बिल्ली तक सब पर 'दूधो नहाओ' का आशीर्वाद फलित होने लगा। तात्पर्य यह है कि सबके लिए

P.T.O.

प्रचुर मात्रा में दूध उपलब्ध हो गया।

प्रश्न क्रमांक '28' का उत्तर

भाषा - विभाषा में अन्तर -

भाषा	विभाषा
1) भाषा बोली का पूर्ण विकसित रूप है।	1) विभाषा बोली का अर्द्धविकसित रूप है।
2) भाषा में साहित्य की महत्ता और प्रचुरता होती है।	2) विभाषा में साहित्य तो होता है, परन्तु उसे महत्ता प्राप्त नहीं होती।
3) भाषा का प्रयोग राजकार्य में होता है।	3. विभाषा का प्रयोग केवल साहित्य और बोलचाल तक ही सीमित होता है।
4) भाषा ~~का~~ क्षेत्र व्यापक होता है।	4). विभाषा का क्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित होता है।

P.T.O

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '19' का उत्तर

अथवा

श्रृंगार रस :-

सहृदय के हृदय में स्थित 'रति' नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से ~~संयोग~~ संयोग होता है, तो श्रृंगार रस की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव :- श्रृंगार रस का स्थायी भाव 'रति' है।

उदा.-

राम को रूप निहारति जानकी,
कंकन के नग की परछाहीं।
याते सबै सुधि भूल गई,
कर टेक रही पल टारत नहीं।

B S E
Laser/Inkjet/Copier

प्रश्न क्रमांक '20' का उत्तर

द्विवेदी युग की काव्य विशेषताएँ :-

1) ~~देशप्रेम~~ :-

1) देशभक्ति :- द्विवेदी युग में देशभक्ति को व्यापक आधार मिला। इस काल में देशभक्ति विषयक लघु एवं दीर्घ कविताएँ लिखी गई।

P.T.O.

योग पूव पृ० + पृष्ठ के अंक =

मध्यप्रदेश

श्न क्र.

2) अंधविश्वासों व रूढ़ियों पर प्रहार :-

इस काल के कवियों ने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों को दूर करने हेतु कविताएँ लिखीं।

3) मानव प्रेम :-

द्विवेदी युग में मानव मात्र के प्रति प्रेम की भावना विशेष रूप से मिलती है।

4. प्रकृति चित्रण :-

द्विवेदी युगीन कवियों ने प्रकृति के अत्यन्त रमणीय चित्र खींचे हैं। प्रकृति का स्वतंत्र रूप में मनोहारी चित्रण मिलता है।

द्विवेदी युगीन कवि	रचनाएँ
1) मैथिलीशरण गुप्त	- पंचवटी, जयद्रथ-वध, भारत-भारती, साकेत, यशोधरा।
2) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	- प्रिय-प्रवास, वैदेही-वनवास, चुभते-चौपदे, रसकलश।
3) रामनरेश त्रिपाठी	- मिलन, पथिक, स्वप्न, मानसी।

Label A4ST-16 99.1x33.9mm
x16

P.T.O.

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '24' का उत्तर

प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ :-

1) शोषकों के प्रति विद्रोह और शोषितों से सहानुभूति :-
इस काल के कवियों ने किसानों, मजदूरों पर किए जाने वाले वाले पूँजीपतियों के अत्याचारों के ~~वि~~ प्रति अपना विरोध कविताओं में प्रकट किया है।

2) सामाजिक यथार्थ का चित्रण :-
इस काल के कवियों ने व्यक्तिगत सुख-दुःख के भावों की अपेक्षा समाज की गरीबी, भुखमरी, अकाल, बेरोजगारी आदि. समस्याओं को उजागर करने हेतु कविताएँ लिखीं।

3) सामाजिक व आर्थिक समानता पर बल :-
प्रगतिवादी कवियों से सामाजिक व आर्थिक समानता पर बल देते हुए निम्न वर्ग व उच्च वर्ग के अंतर को समाप्त करने पर बल दिया।

P.T.O

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रगतिवादी कवि	रचनाएँ
1) नागार्जुन	युगधारा, सतरंगे पंखों वाली।
2) रांगेय राघव	अजेय खण्डहर, मेधावी, पांचाली, राह के दीपक
3) शिवमंगल सिंह 'सुमन'	हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय-सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया।

प्रश्न क्रमांक '22' का उत्तर

शरद जोशी

(i) दो रचनाएँ :- जीप पर सवार इल्लियाँ, चमेली की शादी, अंधों का हाथी, एक था गधा उर्फ अदालत खां।

(ii) भाषा :- शरद जोशी जी की भाषा सरल, सहज एवं व्यावहारिक है। संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली में सहजता है। देशज शब्दों के प्रयोग से भाषा बोधगम्य बन गई है। आपका शब्द चयन सटीक है। आपकी भाषा में एक विशिष्ट प्रवाह देखने को मिलता है। स्थान-स्थान पर मुहावरों व लोकोक्तियों के प्रयोग से हास्य व चंचलता आ गई है। शरद जी व्यंग्य के भाषागत सौन्दर्य ~~को~~ को अपनी छोटी-छोटी उक्तियों के माध्यम से प्रभावशाली बनाने में

P.T.O.

B
S
E

प्रश्न क्र.

सफल रहे हैं। आपकी भाषा में सहजता के साथ-साथ चुटीलापन भी दृष्टिगोचर होता है।

शैली :-

सरल जी ने अपनी रचनाओं में हास्य व्यंग्य शैली को माध्यम बनाया है। इन्होंने अपने व्यंग्य निबन्धों में जहाँ एक ओर सामाजिक विडम्बनाओं व उसके अंतर्विरोधों को आधार बनाया है तो वहीं दूसरी ओर ये व्यक्ति व्यव व्यवहार में परिलक्षित होने वाले छद्म को भी उद्घाटित करने में नहीं चूकते। उन्होंने आलोचनात्मक, तर्क, शब्द आदि विविध शैलियों का प्रयोग किया है। शरद जी सामाजिक स्तर पर भी अपनी चमत्कारिक उत्प्रेक्षाओं से व्यंग्य की सर्जना करते हैं।

(iii) साहित्य में स्थान :-

शरद जी ने फिल्म तथा दूरदर्शन के लिए मुम्बई में रहकर सर्जनात्मक लेखन का कार्य किया। प्रारंभिक दौर में वे पत्रकारिता से भी सम्बद्ध रहे। इन्होंने हिन्दी के गंभीर व्यंग्य को लाखों-करोड़ों लोगों तक पहुँचाया है। इनके इस कृतित्व के लिए हिन्दी साहित्य इन्हें सदैव स्मरण रखेगा।

P.T.O.

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ = अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '23' का उत्तर

जयशंकर प्रसाद

(i) दो रचनाएँ :-
कामायनी, लहर, आँसू, झरना।

(ii) भावपक्ष :-
(1) दार्शनिक विचारधारा :-
प्रसाद जी दार्शनिक कवि हैं। उनके महाकाव्य कामायनी में आनन्दवाद की प्रतिष्ठा हुई है। यह ग्रंथ अपनी अद्भुत छटा बिखेरता हुआ भ्रमित मनुष्यों का पथ-प्रदर्शन कर रहा है।

B
S
E

(2) प्रेम और सौन्दर्य :-
प्रसाद जी प्रेम और सौन्दर्य के उपासक थे। छायावादी कवि प्रकृति की हर वस्तु में ~~प्रेम~~ सौन्दर्य का दर्शन करते हैं। प्रसाद द्वारा व्यक्त सौन्दर्य में बाह्य सौन्दर्य एवं शारीरिक सौन्दर्य का अद्भुत समन्वय है :-

"नील परिधान बीच सुकुमार
खुला था मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली के फूल,
मेघवन बीच गुलाबी रंग॥

P.T.O.

प्रश्न क्र.

(3). करुणा एवं वेदना की अभिव्यक्ति :-

प्रसाद जी के काव्य में भावाभिव्यक्ति के साथ -साथ कल्पना की आधिकता एवं वेदना की मार्मिकता भी परिलक्षित होती है।

(4). प्रकृति चित्रण :-

प्रसाद जी ने प्रकृति के अत्यन्त रमणीय चित्र खींचे हैं। उन्होने प्रकृति को जड़ रूप में स्वीकार न करके चेतन रूप में ग्रहण किया है।

B S E

(5). नारी के प्रति सम्मान :-

छायावादी कवियों ने नारी को सम्मानजनक स्थान दिया है। रीतिकालीन नारी की तरह छायावादी नारी प्रेम की पूर्ति का साधन-मात्र नहीं है। वह इस पार्थिव जगत की स्थूल नारी न होकर भाव जगत की सुकुमार देवी है। प्रसाद जी ने भी नारी के अंगों का चित्रण करते समय इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि उसके सम्मान या प्रतिष्ठा में कहीं कमी न आने पाए।

कलापक्ष :-

(1) भाषा :-

प्रसाद जी की भाषा सहज, सरल, सुबोध एवं तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली है। संस्कृतनिष्ठ शब्दों की बाहुल्यता होने पर भी

P.T.O.

प्रश्न क्र.

उनके काव्य में कहीं भी क्लिष्टता या दुरूहता नहीं आने पाई है। भावों की गहराई एवं कवि कौशल होने के कारण प्रसाद जी की लाक्षणिक एवं व्यंजना मयी भाषा में चित्रोपमता आ गई है।

(2). अलंकारों का प्रयोग :-

प्रसाद जी ने अपने काव्य में अलंकारों का ~~प्र~~ समुचित प्रयोग किया है, जिसके कारण उनका काव्य चमत्कृत हो उठा है। उन्होंने मुख्यत: अनुप्रास, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण आदि अलंकारों का प्रयोग करके अपने साहित्य के कलेवर को सजाया है।

B
S
E

(3). छन्दों का प्रयोग :-

प्रसाद जी अपने काव्य में परम्परागत छन्दों के साथ ही नए-नए छन्दों को लिखकर अपनी मौलिकता का परिचय दिया है।

(iii) साहित्य में स्थान :-

प्रसाद जी एक ऐसे पारस थे, जिनके स्पर्श से हिन्दी की विविध विधाएँ कंचन हो गई। वे एक महान् नाटककार, उपन्यासकार, अद्वितीय कहानीकार एवं निबन्धकार थे। प्रसाद जैसे महान् कलाकार को पाकर हिन्दी गौरवान्वित हो गई। हिन्दी साहित्य प्रसाद के प्रसाद को पाकर धन्य हो उठा।

P.T.O.

18 [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 18 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक २५ का उत्तर

अथवा

संकेत:- यह संसार .... सार्थकता है।

संदर्भ:- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'स्वाति' हिन्दी विशिष्ट के 'खेल' नामक शीर्षक से अवतरित है। जिसके लेखक आधुनिक प्रेमचन्द जैनेन्द्र कुमार हैं।

B प्रसंग:- प्रस्तुत ~~कुमार~~ गद्यांश में लेखक ने संसार की नश्वरता को बताते हुए आत्मा को परमात्मा से जोड़ने की प्रेरणा दी है।

S

E

व्याख्या:- लेखक कहते हैं कि यह संसार क्षणभंगुर है अर्थात् यह हमेशा नहीं रहने वाला है। एक समय के बाद यह नष्ट हो जाता है। इसलिए संसार की किसी भी बात पर हमें दुःख-सुख एवं हर्ष-शोक के भाव प्रकट नहीं करने चाहिए। जैसे यह संसार ब्रह्मा जी ने बनाया है और नष्ट होने के बाद यह उन्हीं में उनमें ही विलीन हो जाता है। यह संसार तो जल के बुलबुले के समान ही है। जैसे पानी का बुलबुला पानी से बनता है और फूटकर उसी में मिल जाता है। फूट जाने में ही बुलबुले की सार्थकता है। उसके फूटने पर पुनः नया

P.T.O.

प्रश्न क्र.

बुलबुला बन जाता है। यही जीवन की सच्चाई है। इस संसार में कुछ भी स्थायी नहीं है। हर वस्तु एक न एक दिन अवश्य नष्ट हो जाती है। जीवन भी एक दिन समाप्त हो जाएगा। इसलिए मनुष्य को दुःखी नहीं होना चाहिए उसे अपने मन को ईश्वर से जोड़ना चाहिए। क्योंकि एक मात्र ईश्वर ही सत्य है।

विशेष :-

1) शुद्ध साहित्यिक एवं संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली को अपनाया गया है।

2) जीवन की यथार्थता को प्रकट किया गया है।

3) संसार की क्षणभंगुरता एवं नश्वरता को रूप प्रतीकों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

B
S
E

प्रश्न क्रमांक '25' का उत्तर

अथवा

संकेत :- मैया कबहि ... भुईं लोटी॥

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'स्वाति' हिन्दी विशिष्ट के पाठ 'वात्सल्य और स्नेह' के अन्तर्गत 'सूर के बालकृष्ण' नामक शीर्षक से अवतरित है। इसके कवि वात्सल्य सम्राट 'सूरदास' जी हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद में बालक कृष्ण माता यशोदा से अपनी चोटी न बढ़ने की शिकायत कर रहे हैं।

P.T.O.

20 [ ] + [ ] = [ ]

यो... पृष्ठ 20 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

व्याख्या:- सूरदास जी कहते हैं कि बालक कृष्ण अपनी माता यशोदा से पूछते हैं कि माता मैया आखिर मेरी चोटी कब बढ़ेगी? वे कहते हैं कि माँ तुमने ही मुझसे कहा था कि दूध पीने से चोटी बढ़ती है तब से मैंने कितनी बार दूध पिया है किन्तु मेरी चोटी अभी भी उतनी ही छोटी है। तू तो कहती थी दूध पीने से मेरी चोटी भी बलदाऊ भैया के समान ही बड़ी हो जाएगी तू मुझे रोज स्नान कराती है मेरी शरीर को पोंछती है तेल और कहती है कि मेरी चोटी नागिन के समान बड़ी होकर जमीन को स्पर्श करेगी। यह कहकर तू प्रतिदिन मुझे भरपेट कच्चा दूध पिलाती है और मेरा प्रिय भोजन माखन रोटी भी मुझे खाने नहीं देती फिर भी मेरी चोटी नहीं बढ़ती वह पहले के समान ही छोटी है।

काव्य सौन्दर्य :-

1) लालित्य प्रधान ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।
2) बाल सुलभ चेष्टाओं का वर्णन।
3) माधुर्य गुण से ओत-प्रोत पद।
4) गीतिपूर्ण शैली है।
5) नागिन-सी में उपमा अलंकार है।

P.T.O.

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '26' का उत्तर

उत्तर(i) 'हिमालय की विशालता'

उत्तर(ii) वैदिक काल से ही हिमालय को पवित्र माना जाता है।

उत्तर(iii) हिमालय को देखकर सारी सृष्टि के प्रति समभाव जाग्रत होता है।

उत्तर(iv) हिमाल यहाँ बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री जैसे पवित्र तीर्थ हैं।

B S E

उत्तर(v)

शब्द		प्रत्यय
कृतज्ञता	-	ता
वैदिक	-	इक

प्रश्न क्रमांक '28' (ब) का उत्तर

जल संरक्षण

रूपरेखा:-

(i) प्रस्तावना
(ii) जल के प्रमुख स्रोत
(iii) जल प्रदूषण
(iv) जल संरक्षण की आवश्यकता
(v) जल संरक्षण के उपाय
(vi) जल के दुरुपयोग से हानियाँ
(vii) उपसंहार

P.T.O.

23

योग पृष्ठ + पृष्ठ 23 = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '27' का उत्तर

राम-जानकी चौक
मानपुर (म॰प्र॰)
दिनांक- 02-03-19

प्रिय सुरेश,
सप्रेम नमस्कार,

मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी सकुशल होगे। मुझे आज सुबह ही यह शुभ समाचार प्राप्त हुआ है कि तुमने राज्य-स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। यह हमारे लिए गौरव की बात है। इसके लिए मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ।

ईश्वर ने तुम्हें प्रतिभा दी है तो तुमने भी मेहनत में कोई कोताही नहीं बरती है। मेरी इच्छा है कि तुम आगे और भी मेहनत करो और इसी तरह सफलता प्राप्त करो। मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।

मेरी ओर से माताजी और पिताजी को भी बधाई देना और छोटे भाई-बहनों को स्नेह।

तुम्हारा मित्र
महेश

B
S
E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक '24' (अ) का उत्तर

नारी है तो कल है

रूपरेखा :-

1) प्रस्तावना
2) प्राचीन भारतीय नारी
3) मध्यकाल में नारी की स्थिति
4) आधुनिक नारी
5) उपसंहार

मैं कवि की कविता कामिनी हूँ,
मैं चित्रकार का रुचिर चित्र।
मैं जगत नाट्य की रसाधार,
अभिलाषा मानव की विचित्र।।

1) प्रस्तावना :-

सृष्टि के आदिकाल से ही नारी की महत्ता अक्षुण्ण रही है। नारी सृजन की पूर्णता है। उसके अभाव में मानवता के विकास की कल्पना असम्भव है। समाज के रचना विधान में नारी के माँ, पत्नी, प्रेयसी, पुत्री आदि अनेक रूप है। वह सम ~~परिस्~~ परिस्थितियों में देवी है तो विषम परिस्थितियों में दुर्गा भवानी। वह समाज रूपी गाड़ी का एक पहिया है, जिसके बिना समग्र जीवन ही पंगु है।

सन्–2019

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी	02 03 2019

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2	9	3	4	2	6	3	0	7
दो	नौ	तीन	चार	दो	छः	तीन	शून्य	सात

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

HSSC EXAM.

केन्द्र क्रमांक –341012

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

रामसखा कुशवाहा

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक..........तक कुल प्राप्तांक

सृष्टि के आदिकाल से ही नारी जीवन के स्वरूप पर दृष्टिपात करें तो हमें ज्ञात होगा कि ~~उस~~ जीवन में कौटुम्बिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों में ~~पुरुषों~~ नारी की अपेक्षा ~~नारी~~ पुरुषों का आधिपत्य रहा है। उसने नारी की स्वतंत्रता का अपहरण कर उसे पराधीन बना दिया। सहयोगिनी व सहचरी के स्थान पर उसे अनुचरी बना दिया और स्वयं उसका मालिक, स्वामी, नाथ, पथ-प्रदर्शक और साक्षात् ईश्वर बन गया। इस प्रकार समाज के रचना विधान में नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय बनकर रह गई है उसकी जीवनधारा रेगिस्तान और हरे-भरे वृक्षों के बीच से प्रतिपल प्रवाहमान है।

2. प्राचीन भारतीय नारी :-

वैदिक काल में नारी जीवन के

P.T.O.

2

प्रश्न क्र.

स्वरूप की व्याख्या करें तो हमें ज्ञात होगा कि वैदिक काल में नारी समाज में महत्वपूर्ण कार्य करती थी। वह पुरुषों के साथ मिलकर ही सामाजिक, धार्मिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्य करती थी। रोमशा और लोपामुद्रा आदि अनेक नारियों ने ऋग्वेद के सूक्तों की रचना की थी। रानी कैकेयी ने युद्धभूमि में जाकर राजा दशरथ की सहायता की थी। रामायण काल में भी नारी की महत्ता अक्षुण्ण रही सीता, अनुसुईया, सुलोचना इस युग की आदर्श नारी हुईं। महाभारत काल में नारी पुरुष के साथ-साथ कन्धे-से-कन्धा मिलाकर चलने लगी। इस युग में नारी समस्त गतिविधियों के संचालन का केन्द्र बिन्दु थी। द्रौपदी, गांधारी तथा कुन्ती इस युग की शक्ति थीं।

3) मध्यकाल में नारी की स्थिति :

मध्यकाल के आते-आते समाज में नारी की स्थिति दयनीय हो गई थी। वह पुरुषों के साथ मिलकर ही सामाजिक कार्यों में भाग लेती थी। मध्यकाल में नारी शासकों की काम-लोलुप दृष्टि से नारी को बचाये जाने के प्रयास किए जाने लगे। वह पुत्री के रूप में पिता पर, पत्नी के रूप में पति पर और माँ के रूप में पुत्र पर आश्रित होती चली गई। समाज सामान्य नारी को दृढ़ से दृढ़तर बन्धनों में जकड़ता चला गया।

P.T.O.

मैथिलीशरण गुप्त के मा के शब्दों में-
"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

मध्यकाल में नारी जनजीवन के लिए इतनी तिरस्कृत, क्षुद्र और उपेक्षित बन गई थी कि तुलसी, सूर और कबीर जैसे कवियों ने उसकी संवेदना व सहानुभूति में दो शब्द तक नहीं कहे कबीर ने नारी को 'महाविकार', 'नागिन' आदि कहकर उसकी घोर निन्दा की तुलसीदास ने नारी को 'ढोल, 'गँवार' और 'पशु' के समान ताड़ना का अधिकारी कहा।
'ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।'

4) आधुनिक काल में नारी की स्थिति:-

आधुनिक काल के आते-आते समाज में नारी चेतना का भाव उत्कृष्ट रूप से जागृत हुआ। उत्तर बंगाल में राजराममोहन राय एवं उत्तर भारत में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी को पुरुषों के अनाचार की छाया से मुक्त करने की क्रान्ति का बिगुल बजाया। सुमित्रानन्दन पन्त ने तीव्र स्वरों में माँग की-
"मुक्त करो नारी को मानव, चिर वंदिनी नारी को।
युग-युग की निर्मम कारा से, जननी-सखि प्यारी को।।

आधुनिक काल में नारियों ने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक सभी क्षेत्रों में आगे बढ़कर

P.T.O.

प्रश्न क्र.

कार्य किया। विजयलक्ष्मी पण्डित, सुचेता कृपलानी, कमला नेहरू, इन्दिरा गाँधी, सरोजिनी नायडू, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

सरकार ने भी स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् समाज में नारी की स्थिति सुधारने हेतु प्रयास किये हैं।

5) उपसंहार :-

हमें वैदिक काल से लेकर आज तक नारी के जीवन के स्वरूपों का आभास मिल जाता है। वैदिक काल की नारी ने शौर्य, त्याग, समर्पण, विश्वास, शक्ति आदि गुणों का परिचय दिया। पूर्व मध्यकाल की नारी ने इन्हीं गुणों का अनुसरण करके अपने अस्तित्व को बचाए रखा। उत्तर मध्यकाल में अवश्य नारी की स्थिति दयनीय हो गई परन्तु आधुनिक काल के आते आते उसने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त कर लिया। वैदिक काल में भगवान शिव की ही कल्पना अर्द्धनारीश्वर के रूप में की गई। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" जहाँ स्त्रियों का अनादर होता है वहाँ नियोजित होने वाली समस्त क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं। नारी पूजा के योग्य है। वह घर की ज्योति है, वह गृह की साक्षात् लक्ष्मी है। आशा है कि भारतीय नारी का उत्थान भारतीय संस्कृति की परिधि में हो, वह पश्चिम की नारी का अनुकरण न करके अपनी मौलिकता का परिचय दे।

" मानवता की मूर्तिवती तू भव्य भाव भूषण भण्डार।
दया, क्षमा, ममता की आकार, विश्व प्रेम की है आधार।